B. A. Third Year

First paper

Geographical Thought

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of geography

Harishchandra P. G. College Varanasi

"रूसी भूगोल"

"Russian Geography"

अन्य यूरोपीय देशों से भिन्न रूस अति विशाल क्षेत्र का साम्राज्य था। रूस के विशाल क्षेत्र के कारण उसकी कोई औपनिवेशिक (Colonial) महत्वाकांक्षा एवं आवश्यकता भी नहीं थी जो कि 17 वीं एवं 18 वीं शताब्दी के दौरान यूरोपीय भूगोल का स्वरूप बनाने का बड़ा कारक था। अक्टूबर 1917 की बोल्शेविक क्रान्ति ने रूस के शासन एवं समाज में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिये। प्राकृतिक संसाधन सम्पन्न रूस में किसान-मजदूरों के विशाल जन समुदाय की भूखमरी (Starvation) आर्थिक दुर्दशा तथा शासक सम्राट जार की इस समुदाय की उपेक्षा ने जार एवं उसके परिवार के वध (Killing) को प्रेरित किया। इसने रूसी भूगोल वेत्ताओं में पर्यावरण निश्चयवाद की अवधारणा की स्वीकृति तथा आर्थिक निश्चयवाद को प्रबल बनाया। रूसी क्रान्ति से पूर्व एवं रूस के बाद के भौगोलिक चिन्तन में पर्याप्त अन्तर पाया जाता है।

1⇒ पूर्व सोवियत भूगोल (1917 से पूर्व) - Pre Soviet Geography)

रूस में यह स्वतन्त्र भौगोलिक चिन्तन का युग था। यूरोपीय रूस में भूगोल का व्यावसायिक विकास जर्मनी से भी 60 वर्ष पहले का है। सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दियों में राज्य विस्तार के उद्देश्य से अनेक खोज यात्राओं का आयोजन किया गया। जिनके माध्यम से मध्य एशिया, उत्तरी साइबेरिया तथा सुदूर पूर्वी भाग की खोज की गयी थी। रूसी सम्राट पीटर महान (1682-1725) ने अपने शासनकाल में पूर्व दिशा में राज्य विस्तार के उद्देश्य से इन क्षेत्रों के सर्वेक्षण के लिए खोज अभियानों का प्रबन्ध किया था। इन सर्वेक्षणों का प्रमुख उद्देश्य उत्तरी तथा पूर्वी क्षेत्रों में स्थलाकृतिक स्वरूप का सही विवरण प्रस्तुत करना और वहाँ उपलब्ध आर्थिक संसाधनों का पता लगाना था। रूसी विज्ञान अकादमी (Russian Academy of Science) ने 1758 में भौगोलिक अध्ययन के लिए एक स्वतन्त्र विभाग की स्थापना की। रशियन एकेडेमी ऑफ साइन्सेज, मोस्को के भूगोल विभाग का अध्यक्ष एम॰ वी॰ लिमोनोसोव - 1758 में बना जो संसार में प्रथम

भूगोल विभाग अध्यक्ष बना | अर्थात यह विश्व में भूगोल का प्रथम स्वतन्त्र विभाग था जिसके संस्थापक अध्यक्ष किनोनो सोव थे। इस काल में रूसी भूगोल में प्रारम्भिक कार्य अन्वेषण, सर्वेक्षण एवं मानचित्रण के रहे | 1639 में मोस्कोविटिन ने ओखोत्स्क सागर

व प्रशान्त महासागर के पश्चिमी तट तक की यात्राए की | 1648 में देजनेव व पोपोव यात्रियों ने बेरिंग जलडमरूमध्य को पार किया | 1667 में गोदुनोव ने साइबेरिया का रेखा चित्र तैयार किया | 1701 में रेमजोव (Remzov) ने साइबेरिया की प्रथम मानचित्रावली (Atlas of Siberia) तैयार की | 1719 में (पीटर काफिला) मानचित्र कार्यालय की स्थापना की गयी, इवान किरिलोव (Kirilov) को इसका अध्यक्ष बनाया गया | किरिलोव ने रूस के प्रादेशिक भूगोल पर एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक समस्त " रूसी साम्राज्य की प्रगतिशील अवस्था (The Flourishing stage of all the Russian Empire) था |

1734 में किरिलोव ने फ्रांसीसी मानचित्रकारों की तकनीकी सहायता से रूसी साम्राज्य की प्रथम मानचित्रावली का प्रकाशन कराया | 1745 में विज्ञान अकादमी ने भी रूसी साम्राज्य की मानचित्रावली का प्रकाशन कराया | 1746 में चिरिकोव (Chiri Kove) ने प्रशान्त महासागर में रूसी भौगोलिक खोजों का सामान्य मानचित्र तैयार किया |

रूस में भूगोल का विकास भूतल के समग्र विज्ञान के रूप में हुआ समग्र विज्ञान के रूप में भूगोल के विकास के लिए 1845 में इम्पीरियल रूसी भौगोलिक समिति (Imperial Russian Geographical Society) की स्थापना हुई | इस संस्था ने भूगोल, भूगर्भशास्त्र, मौसम विज्ञान, जलविज्ञान, मानव शास्त्र तथा पुरातत्व विज्ञान को विकसित करने का कार्य किया | इन सभी विज्ञानों को सम्मिलित रूप से भौगोलिक विज्ञान (Geographical Sciences) के अन्तर्गत रखा गया था | 1800 से 1861 के बीच मध्य यूरोपीय रूस को 15 प्रादेशिक भागों में बाँटा गया | प्रत्येक प्रदेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अध्ययन किया गया | बड़े-बड़े जमींदारों द्वारा ग्रामीण मजदूरों का शोषण किया जा रहा था | इसी बात को ध्यान में रखकर किसानों की जीवनदशा सुधारने के लिए एक पुस्तक " मध्य विश्व भूगोल " की रचना की गयी |

कार्ल मार्क्स (Carl Marx (1818–1883))
फ्रेडरिक एंगेल्स (1820–1895)
वी. आई. लेनिन (उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक) – के समाजवादी विचारों का प्रभाव पड़ा – कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना | साम्यवाद का विकास ?

रूसी वैज्ञानिकों में "लोमोनोसोव" का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है। उनके नाम पर ही देश का सर्वोच्च वैज्ञानिक पुरस्कार (लोमोनोसोव मेडल) दिया जाता है और मास्को स्टेट विश्वविद्यालय का नाम बदलकर लोमोनोसोव विश्वविद्यालय कर दिया गया है।

2. सेमेनोव (P.P. Semenov) (1827-1914) रूसी भूगोल के निर्माण में सेमेनोव का योगदान 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का है। जबकि लोमोनोसोव का मध्य 18वीं शताब्दी तक था। आपकी शिक्षा जर्मनी में होने के कारण जर्मन विद्वान रिटर का प्रभाव आप पर ज्यादा था। आपने भूगोल की सेवा सेंट पीटर्सबर्ग की भौगोलिक सोसाइटी के निदेशक पद पर रहते हुए की।

सेमेनव ने- ट्रांसोरियन बेसिन, अल्ताई पर्वत, तियनशान (1858) की खोज की तथा तुर्किस्तानी मरुस्थल (1888) को खोजा। आपने कई प्रादेशिक भूगोल लिखे। आपने भूगोल में प्रासंगिकता (Relevance) के विचार को महत्व दिया। अर्थात – भूगोल को समसामयिक समाज की समस्याओं का अध्ययन एवं उनके निदान में योगदान करना चाहिए। सेमेनव तत्कालीन गरीब ग्रामीण रूसी समाज की गरीबी कम करने में भूगोल के योगदान में अधिक रुचि रखते थे।

रचना – "रूसी साम्राज्य की भौगोलिक एवं सांख्यिकीय शब्दकोष।"

3. ए.आई. वोयेकोव - [(A.I. Voeikov) - 1842 - 1916] - आपकी प्रारम्भिक शिक्षा रूस में एवं उच्च शिक्षा जर्मनी के गोटिंगन एवं हाइडेलबर्ग विश्वविद्यालयों से हुई थी। आप पहले सेंटपीटर्सबर्ग में भूगोल के प्राध्यापक थे। जो प्रोन्नत होकर 1887 में प्रोफेसर बन गये। वोयेकोव एक भौतिक भूगोलवेत्ता थे जो मुख्यतः जलवायु विज्ञान के विशेषज्ञ थे। आपके विचारों ने रूस की कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन किये। आपके सुझाव पर ही यूक्रेन में गेहूँ फसल, (जार्जिया में चाय, तुर्किस्तान में कपास) का उत्पादन प्रारम्भ किया गया। आपने बताया कि स्टेपीज घास के मैदानों में अवनलिका अपरदन (Gully Erosion) केवल प्राकृतिक कारण से नहीं वरन अति-पशुचारण से हुआ है। आपने बर्फ की गहराई मापने की विधि पर प्रकाश डाला और हिम विज्ञान (Snow Science) (Glaciology) की आधारशिला रखी थी।

रचनाएं – ① सर्वप्रथम 1886 में 'जेम्स काफेन' की पुस्तक 'ग्लोब की पवनों' का समीक्षात्मक लेख लिखा।

② 1887 में 'विश्व की जलवायु' पुस्तक की रचना की तथा जर्मन भाषा में अनुवाद कराया।

③ 1906 में 'पृथ्वी पर जनसंख्या का वितरण' नामक पुस्तक लिखी।

④ 1909 में रूस में ग्रामीण जनसंख्या के समूहन पर एक लेख लिखा।

⑤ 1914 में वोइकोव ने अपनी 'रूसी तुर्किस्तान' नामक पुस्तक में पर्यावरण और मानवीय क्रिया का विवरण दिया है।

(04) <u>वी. वी. डोकुचेव</u> (डोकुचायेव) (Dokuchaiev - 1846-1903) - आप रूस में भूगोल के प्रथम प्रोफेसर थे जिनकी नियुक्ति 1885 में सेंट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय में हुई थी। 1864 से 1873 के मध्य आपने रूस की विज्ञान अकादमी के भूगोल संस्थान में आर्थिक भूगोल के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। 1883 में आपको डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। आपके शोध का विषय था - "रूस की चरनोजम मिट्टी।" (Chernozem Soil of Russia)।

रचना - ① रूस की वनस्पति (Vegetation of Russia)

② प्राकृतिक संसाधनों का आर्थिक मूल्यांकन (Economic Appraisal of Natural Resources)

आपने 1889 में मिट्टी निर्माण प्रक्रिया का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया और जलवायु के आधार पर मिट्टियों की पेटियों का निर्धारण किया। आपने मिट्टी को मौलिक चट्टान, जलवायु, वनस्पति, ~~[illegible]~~ ढाल एवं जन्तुओं के जटिल अन्तर्क्रिया का परिणाम बताया। मिट्टी परिच्छेदिका को (Soil Profile) को किसी भी मिट्टी के बनने का इतिहास बताया जो भिन्न-भिन्न होने के कारण मिट्टियों की पहचान का आधार है।

05 - <u>पीटर क्रोपाटकिन</u> (Peter Kropotkin - 1842-1921)

रूसी उच्चकुलीन शासक वर्ग में जन्में क्रोपाटकिन को प्रशासकीय सेवा के लिए शिक्षित किया गया। आपने साइबेरिया में यह सेवा की। परन्तु इससे असन्तुष्ट क्रोपाटकिन ने सेण्ट पीटर्सबर्ग में भूगोल का अध्यापन किया भौतिक भूगोल में ख्याति प्राप्त की तथा रशियन ज्योग्राफिकल सोसायटी में कार्य किया। 1860 तथा 1870 के दशकों में रूसी किसानों तथा समाज की दुर्दशा ने इनकी रुचि वैज्ञानिक भौतिक भूगोल से हटाकर सामाजिक समस्याओं की ओर बदली और आप अराजकतावादी (anarchist) (शासन व्यवस्था में अविश्वास) - बन बैठे। 1872 में गिरफ्तार कर देश से निकाले गये और फ्रांस भेज दिये गये। देश निष्कासन की सजा से मुक्त होने के बाद 1886 में ब्रिटेन चले गये। और 1917 तक वहीं रहे -

ब्रिटिश प्रवास की अवधि (1886-1917) में वे लन्दन में 'ब्रिटिश ज्योग्राफिकल सोसाइटी" में कार्य करते रहे। रूसी क्रान्ति के बाद 1917 में 75 वर्ष की अवस्था में रूस वापस आ गये और 1921 में उनका देहान्त हो गया।

रचनाएं - ① भू-आकृतिक अध्ययन (1893)

② खेत, फैक्ट्री एवं कार्यशाला (1898)

③ पारस्परिक सहायता (Mutual Aid) - जैविक उद्भव का एक तत्व (1902)

④ राज्य और इसका ऐतिहासिक उत्तरदायित्व (1916)

क्रोपाटकिन ने भूगोल को समाज के लिए प्रासंगिक (Relevant) बनाने का कार्य किया। और दो लेख लिखे -

① What Geography ought to be.? "(1885)
भूगोल को क्या होना चाहिए।

② अराजकतावाद और क्रान्ति।

वे डार्विन के प्राकृतिक चयन के सिद्धान्त के विरोधी थे। आपके अनुसार मानव समुदाय प्रकृति एवं पशु समुदाय की ही भाँति है जिसमें प्रतिस्पर्धा तथा सहयोग साथ-साथ चलते हैं।

क्रोपाटकिन ने प्रकृति के विषय में तीन विचार प्रस्तुत किये -

① प्रकृति जैव-सम्पूर्ण (organic whole) है जो उसके संघटक (अवयवों (organs) से बड़ी होती है।

II वह ऐतिहासिक (Historic) है जो समय एवं कालिक घटनाओं का परिणाम है।

III वह स्वाभाविक (Spontaneous) है।